ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-1, No.-1, **PP-296-299,** YEAR-2014

समीक्षावाद और आधुनिक चित्रकला का समीक्षात्मक लेख

❑ **डॉ0 अमृत लाल**

सार– *"समीक्षावाद और आधुनिक चित्रकला को समीक्षात्मक दृष्टिकोण से देखा जाय तो आधुनिक कला तर्क एवं सहज वृत्ति की टकराहट पड़ती है बहुधा आज के चित्रकार अपने चित्रों के माध्यम से तर्क वृद्धि के द्वारा स्वर्ग लोक की सत्ता को समझाना चाहते है। जबकि आज के चित्रकारां को चाहिए कि वे चित्रों में भावों के माध्यम से (हृद्धय–पक्ष) भाव प्रधान यर्थाथ संवेदना, अतः प्रेरणा, मानव जीवन के उन पहलुओं को जो हमारे व्यवहारिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण है को दर्शाये। जिसमें एक आदर्श समाज एवं राष्ट्र की स्थापना हो सकें।*

अतः यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि समीक्षावाद एक जन–आन्दोलन आधुनिक कला के रूप में भारतीय चित्रकला जगत में उभरा है जो समीक्षावादी आधुनिक कला के रूप में भारतीय चित्रकारों का महत्वपूर्ण देन है।"

समीक्षावाद और आधुनिक चित्रकला का समीक्षात्मक लेख – ज्यों–ज्यो कोरी आवश्यकता तथा उपादेयता से आगे बढ़कर कला के स्वतंत्रा रूपों में समादर होने लगा है। त्यों–त्यो एक नया शक्ति स्रोत मानकर उसके निरन्तर उन्नययन एवं परिष्करण पर आस्था जमती जा रही है। भले ही कला के अभिनव रूपों की प्रचुलता को छोड़कर उसका दायरा सीमित हो, पर पाश्चात्य शिक्षा, परम्परा की सतत् गतिशीलता और परिस्थितियों के संघात ने कला के नित नये आविष्कारों और प्रयोगों में भारी क्रान्ती लायी है।

पहले का चित्रकार .ष्टा था, विराट प्र.ति से असंख्य तत्वो को बटोरकर अनेक विधि अभिप्रायों की व्यंजना करता हुआ वह अचिन्तन अगम्य सृष्टि के रहस्य और जीवन के मूल भूत कार्यों को अपनी चिरतंन कला सृष्टि में अमर कर देना चाहता था। उसकी स्वतः सर्वांगीण .ष्टि भीतर मौलिक प्रेरणा से उद्दबुद्ध होती थी। किन्तु आज का चित्रकार परिस्थितियों का विश्लेषण बन गया है। भौतिक द्वन्द्वों ने उसमें असंतोष जगा दिया है। समस्या की जटिलताओं के अनुसार अर्न्तद्वन्द्व ने उसके अन्तस को झकझोर डाला है। उसकी भिन्न–भिन्न वृत्तिया बाहरी और भीतरी आघातो के खिंचाव से ग्रस्त है। यही कारण है कि उसका व्यक्तिवादी, अहम, मौजूदा परिस्थितियों से सहमत न होकर कला में सामाजिक क्रान्ति उपस्थित कर दी है। जिससे जीवन के तथा कथित सत्यों का सर्वथा नवीन माध्यमों और नवीन दृष्टिकोणों से देखने की अभिलाषा उसमें जाग गयी है।

आज आम दर्शक का जब समकालीन आधुनिक चित्रकला से आमना–सामना होता है तो उसके मन में उत्पन्न प्रतिक्रिया पर बहुत कुछ लेख लिखा जा चुका है। दूसरी तरफ बहुत से चित्रकारों के हाव–भाव से ऐसा लगता है कि उसके मन में आम दर्शक गवार होता है। मैंने कई बार चित्रकारों से तथा आम दर्शको से यह जानने का प्रयास किया कि दोनो के दृष्टिकोण में इतना फर्क क्यों है। कुछ चित्रकारों का यह जवाब होता है जो भी चित्र बनाते है। वे अपनी अन्तर्रात्मा की पुकार के अनुसार बनाते है, तथा बनाते समय उनका यह कतई " प्रयोजन'' नही रहता है कि उनके द्वारा बनाये गये चित्र दर्शकों को संदेश दें। इसके ठीक विपरीत कई चित्रकारों का यह कहना होता है

एसोसिएट प्रोफेसर– ललित कला विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ (उ0प्र0), भारत

कि कोई भी रचनात्मक कार्य यदि अपने निर्माता तक ही सीमित रह जाये और अन्य दर्शको, पाठको श्रोताओं को अपनी अभिव्यक्ति को अवगत कराने में असमर्थ रहे तो शायद वह कला अधूरी है।

यह तो सम्बन्धित चित्रकारों का अपने कलात्मक प्रतिक्रिया पर व्यक्तिगत विचार है। सृजनात्मकता मे न तो कुछ सही होता है और न ही गलत अतः दोनो परस्पर विरोधी विचारधाराओं के बीच यह नहीं कहा जा सकता है कि यह विचारधारा ठीक नहीं है। परन्तु आम दर्शकों की प्रतिक्रिया से यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि उनके मतानुसार कला.ति को समझाने का उत्तरदायित्व कलाकार का है। यदि कलाकार अपने अन्तरात्मा की पुकार को केवल अभिव्यक्ति करना चाहते है तथा कोई सदेश नहीं देना चाहता तो अपनी .ति को प्रदर्शित क्यों कर रहा है? परन्तु इसका दूसरा पहलू यह है कि यदि दर्शक चाहे कि कलाकार सभी कुछ तैयारकर उनके सामने रख दे जिससे कि दर्शक को कला को समझने में कोई प्रयास न करना पडे, तो शायद यह दर्शक पक्ष की कमी इंगित करता है। अगर किसी कलाकार ने इतने परिश्रम और लगन से कोई कला.ति निर्मित किया है तो हमारा भी यह उत्तरदायित्व है कि हम उसे समझने का प्रयास तथा पहल करें। इसके लिये धैर्य के साथ अपने सुन्दर कला के प्रति कुछ रूचि भी पैदा करना आवश्यक है। चित्रकला मे कितनी रूचि आम नागरिक रखता है, यह किसी भी कला प्रदर्शनी में देखी जा सकती है। प्रवेश निः शुल्क मुख्य मार्ग पर स्थित कला वीथिका इन सब सुविधाओं के बावजूद यदि हम महानगरों में देखें तो सामान्य रूप से कला प्रदर्शनियों में आने वाले वही होते है जो कला जगत से जुड़े होते है। आम नागरिक शायद अपने बहुचौनलीय टी०वी० सेट से फुरसत निकालने का न तो प्रयास कर पाता है और न ही सफल हो पाता है।

कला समाज का दर्पण है और समाजोन्मुखी कला का प्रयोजन है, चाहे वह प्रचार हो चाहे विज्ञान का प्रसार हो चाहे समाजोन्नत का सब के लिये कला एक सहायक सिद्ध हुई। समाजोन्मुखी कला का तात्पर्य है वह कला जो वर्तमान समाज को ध्यान में रखकर निर्मित की जाये सामाजिक हित के लिये सामाजिक विषय वस्तु वाली हो सामाजिक भावना आशा–अभिलाषा, चिता एवं समस्याओं को प्रतिनिधित्व करती हो। उसका स्वरूप ऐसा होना चाहिये जो सभी को आसानी से समझ में आ सके। विशेष स्तर के लिये न हो, बल्कि देश की अधिकांश जनता को ध्यान में रखकर प्रस्तुत की जाये। इसका प्रचार–प्रसार मात्र बडे बडे नगरों तक ही न सीमित रहे, बल्कि छोटे शहरों कस्बों तथा गांवों में भी लगाई जाये, इस तरह की कला कृतिया प्रस्तुत की जाये तो साधारण जन को शिक्षित प्रबुद्ध एवं प्रभावित तो करे ही उनमें कला के प्रति रूचि बोध भी जाग्रत करें और उन्हें सामाजिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से परिष्कृत भी करे, ताकि उनका जीवन सुखमय शान्तिमय और प्रगतिशील बने। समाजोन्मुखी कला का प्रयोजन सामाजिक परिवर्तन ही हो सकता है और राष्ट्र का विकास लेकिन बहुधा आज के बुद्धिमानी समकालीन आधुनिक कलाकार अपने बौद्धिक क्षमता का प्रदर्शन करते हुये आत्म अभिव्यंजना की ओर मुक्त होता ही चला जा रहा है। कला मात्र व्यक्तिवादी बन कर रह गयी है। उसने धार्मिक राजनैतिक सामाजिक विषय वस्तु को अपनी कला से बहिष्कृत कर दिया और व्यक्तिगत शैली को महत्व देना आरम्भ किया है। इतना ही नही उसने पहले की सभी कलागत मान्यताओं सिद्धान्तों को भी त्याग दिया और अकला के रास्ते पर चलकर कला को नितान्त अर्थहीन अरूप तथा और साधारण स्वरूप दे डाला है। वह इतना मुक्त हो गया है कि अब उसकी कला विक्षिप्तावस्था को छू रही है। आज समकालीन कला ने ऐसा रूप अपना लिया है कि वह दर्शक की समझ और पकड़ से पूरी तरह बाहर चली गयी है कला जो एक सशक्त भाषा के रूप में विचारों तथा भावनओं का वाहक थी सांस्.तिक व्यक्तिगत प्रलाप–अनाप–शनाप बिल्कूल सिरफिरी तथा ऊंट–पटांग दुरुह अनबूझ तथा अटपटी हो गई।

अरूपवादी कला के नाम पर कला मात्र तकनीक तथा माध्यम की विचित्रताओं का खिलवाड

बनकर रह गई। रंग टपका कर चित्र बनाना, रंगीन कागज तथा पदार्थो को चिपका कर चित्र बनाना, तूलिका के बजाय उंगली से रंग पोत कर चित्र बनाना, नंगी लडकी के शरीर पर रंग पोत कर उसे कैनवास पर लुडकवा कर उसके बदन के धब्बों से चित्र बनाना, कैनवास आगे रखकर पिस्तौल की गोली मारकर उसमें छेद कर के चित्र बनाना आदि क्या क्या रिवलवाड नहीं किया जा रहे है। चित्रकला के साथ क्या क्या तमाशे आधुनिक चित्रकला के नाम पर किये जा रहे है? वास्तव में इसे अकला (।दजप ।तज) आन्दोलन कहा जा सकता है। जो समाज से लैस मात्रा भी सम्बन्ध नही रखता पाश्चात्य आधुनिक कला के बारे में यह कहा जाना अतिशयोक्ति न होगा कि कला दो भयानक मानव द्रोही महायुद्धों के वातावरण का प्रतिफल मात्र है। इसे नकारा नही जा सकता इसे मानव संहार के रक्त में जन्मा सृजन ही कहा जा सकता है।

प्रोफेसर आर०सी० शुक्ल नितात नवीनता के लिए भारतीय कला की आधुनिक रूप प्रस्तुत किया। उन्होंने १९६९ तक विभिन्न चित्राण शैलियों में कार्य करने के पश्चात महसूस किया कि भारतीय चित्रकला में भारतीयता का स्वरूप होना चाहिए। तब से आपने चित्रण कार्य भारतीयता का ध्यान में रखकर पुनः उस ओर मुड गये। जहाँ आकर समीक्षावादी कला दर्शन में जन्म लिया और इस दिशा में प्रभावित होकर भारत के विभिन्न नगरों के क्रियाशील चित्रकारों को उक्त दर्शन की ओर मोड़ दिया। प्रो० आर० एस० धीर, डॉ. कमलेश दत्त पाण्डेय, श्री बाला दत्त पाण्डेय, श्री वेद प्रकाश मिश्र, डॉ० गोपाल मधुकर चतुवदी, संतोष कुमार सिंह, केसरी कुमार मेहरोत्रा, दिलीप कुमार, श्री अशोक ढाका, राजेश शर्मा तथा मध्य प्रदेश, दिल्ली व विहार के अनेक चित्रकारों एवं कला विदों ने समीक्षावादी आन्दोलन में भाग लिया। अब तक समीक्षावादी चित्रकारों की प्रदर्शनी दिल्ली, बम्बई, गोरखपुर, कलकत्ता और प्रोफेसर राम चन्द्र शुक्ल की समीक्षावादी एकल चित्र प्रदर्शनी इलाहाबाद तथा वाराणसी में आयोजित हो चुकी है और आशा है कि इसी प्रकार समीक्षावादी चित्रो की प्रदर्शनियाँ आयोजित की जाती रहेगी।

अतः यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि समीक्षावाद एक जन आन्दोलन आधुनिक कला के रूप में चित्राकला जगत में उभरा है जो समीक्षावादी चित्रकारों का महत्वपूर्ण देन है।

निष्कर्ष एवं उपसंहार के .ष्टिकोण से देखा जाये तो आधुनिक कला में तर्क एवं सहज वृत्ति की टकराहट पड़ती है। बहुधा आज के चित्रकार अपने चित्रों के माध्यम से तर्क बुद्धि के द्वारा स्वर्ग लोक की सत्ता को समझाना चाहते है। जब कि आज के चित्रकारों को चाहिए कि वे चित्रों में भावो के माध्यम से (ह्रदय–पक्षा) भाव प्रधान यथार्थ संवदेना, अन्तः प्रेरणा मानव जीवन के उन पहलुओं को जो हमारे व्यवहारिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण है, को दशयि। जिसमें एक आदर्श समाज एवं राष्ट्र की स्थापना हो सके।

दूसरी ओर क्रान्ति एवं समाज का संघर्ष भी प्रतिलक्षित होता है। इन वर्ग संघर्षों के कारण कलाकार जिस ओर झुक गया वहीं उसकी कला शैली हो गयी और इस प्रकार आधुनिक कला में विभिन्न प्रवृत्तियों और नये–नये कलेवरों का प्रभाव कला रूपों में प्रयोग, विभिन्न चरणों में बिगड़ता बनता रहा है। ''इस .ष्टिकोण से समकालीन आधुनिक कला समीक्षावाद एक सशक्त नवीन आधुनिक कला जन–आन्दोलन है।'' उक्त .ष्टिकोण को समीक्षावादी चित्रकार डॉ० गोपाल मधुकर चतुर्वेदी की यह कविता पूर्णतः परिभाषित करती है।

बस ..... बस यही है आन्दोलन!
जो मन में हलचल पैदा कर दे वही होता है आन्दोलन
जो बंद आँखें खोल दे, वही होता है आन्दोलन
समझदारों के लिए आन्दोलन विरोध नही,
विद्रोह भी नही, अवरोध भी नही,
बस सही दिशा की ओर इंगित करने का प्रयास है।
भूले–भटकों को सही दिशा देने का प्रयास है।
– मधुकर

समीक्षावादी कला प्रदर्शनी के सभी चित्रों

को देखने के बाद तथा समीक्षावाद का घोषणा पत्रा पढ़ लेने के पश्चात यही लगता है कि निश्चित ही यह एक क्रान्तिकारी कदम है 'भारतीय चित्रकला के क्षोत्र मे। अब तक जहाँ भारतीय आधुनिक कहलाने वाले कलाकार मात्रा पश्चिमी कला शैलियों के पचिन्हों पर चल कर भारतीय कला को आधुनिकता प्रदान करने का निरर्थक प्रयास कर रहे थे। वहीं समीक्षावादी कलाकारों ने भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल एक ऐसे आधुनिक कला आन्दोलन का सूत्रापात किया है जो वर्तमान भारतीय जन जीवन को प्रभावित तथा जागरूक करने में पूरी तरह समर्थ है और भारतीय कलाकारों के सामने एक मौलिक प्रगति का द्वार खोलता है।

"अन्त में मैं यही कहना चाहूँगा कि उक्त अध्ययन, सूक्ष्म विश्लेषण एवं समीक्षावादी चित्रों के अवलोकन एवं कलाकारों की व्यक्तिगत वार्तालाप से यह महसूस हुआ कि हम अपने अतीत के साथ–साथ वर्तमान को भी देख रहे है। इन चित्रकारों में पकड़ मिली, पहचान मिली, अनुभूति एवं जागृति मिली और मुख्य रूप से मिली स्पष्टता, जिन्हें जनवाद जानना है या जो जनवाद की परिभाषा चाहते है एक बार समीक्षावादी चित्र एवं चित्र प्रदर्शनी देख ले तो सब कुछ स्पष्ट हो जाये। इस शैली में राष्ट्रीय बोध है, मानवीय समझ है और जूझने के लिए आह्वाहन एवं सांस्कृतिक चेतना है। इस शैली के विषय–वस्तु, तकनीक, आकार, रंग, रूप, रेखाएं, प्रतीक, अभिव्यंजना, व्यंग आदि साधारणीकरण एवं अभिव्यक्तिकरण में पूर्णतः सक्षम है। यदि एक ही वाक्य में कहा जाये तो–"समीक्षावादी चित्रकला अतीत के फलक पर वर्तमान का एक्सरे है।"

उक्त कथन में प्रायः समाज को मूल आधार माना गया है। इस प्रकार हम समीक्षावाद पर विचार करते–करते समाज की वर्तमान समस्याओं तक पहुँच जाते है जो समीक्षावाद के विकास का मूल आधार शिला है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. 'समीक्षावाद' (एक कदम और आगे), लेखक डॉ0 गोपाल मधुकर चतुर्वेदी से साभार।
2. आधुनिक कला 'समीक्षावाद', लेखक– प्रो० रामचन्द्र शुक्ल से साभार।
3. आधुनिक कला का विकल्पः "समीक्षावाद" लेखक–बालादत्त पाण्डे, प्रयाग उ०प्र० से साभार।
4. श्री केसरी कुमार मेहरोत्रा एवं डॉ० कमलेश दत्त पाण्डे के विचारो से साभार।